सामाजिक विज्ञान

कक्षा 6

Chapter 4: इतिहास की समय-रेखा एवं उसके स्रोत

To get notes visit our website

mukutclasses.in

प्रश्न, क्रियाकलाप और परियोजनाएँ

प्रश्न 1. एक परियोजना के रूप में अपने आस-पास उपलब्ध इतिहास के स्रोतों का उपयोग करते हुए अपने परिवार (यदि आप गाँव में रहते हैं, तो गाँव) का इतिहास लिखिए। परियोजना के लिए अपने शिक्षक से मार्गदर्शन हेतु निवेदन कीजिए।
उत्तर:

परियोजना विषय: मेरे गाँव और परिवार का इतिहास

परिचय: इतिहास केवल राजा-महाराजाओं की कहानियों तक सीमित नहीं होता, बल्कि आम लोगों और उनके जीवन की घटनाएँ भी इतिहास का हिस्सा होती हैं। इस परियोजना के अंतर्गत मैंने अपने गाँव और परिवार के इतिहास को जानने की कोशिश की।
गाँव का नाम और स्थिति: मेरा गाँव रामपुर उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में स्थित है।
गाँव का इतिहास: गाँव के बुजुर्गों के अनुसार यह गाँव लगभग 200 साल पुराना है। पहले यहाँ केवल कुछ परिवार रहते थे, जो जंगल साफ करके बसे थे। धीरे-धीरे गाँव में और लोग आकर बसने लगे। गाँव का मुख्य मंदिर "शिव मंदिर" लगभग सौ साल पुराना है, जिसे मेरे परदादा के समय में बनवाया गया था। गाँव में पहले बैलगाड़ी और पैदल ही यात्रा होती थी, लेकिन अब सड़कें बन चुकी हैं।
परिवार का इतिहास: मेरा परिवार चार पीढ़ियों से इस गाँव में रह रहा है। मेरे परदादा स्वतंत्रता संग्राम के समय गाँव के मुखिया थे और उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ होने वाले आंदोलनों में हिस्सा लिया था। मेरे दादा खेती के साथ-साथ गाँव के स्कूल में अध्यापक भी थे। उन्होंने गाँव में शिक्षा का महत्व फैलाया। मेरे पिताजी अब भी खेती करते हैं लेकिन साथ ही आधुनिक तकनीक का उपयोग भी करते हैं, जैसे ट्रैक्टर और मोबाइल ऐप्स से कृषि जानकारी लेना।
इतिहास के स्रोत: इस परियोजना के लिए मैंने निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया:

1. अपने दादा-दादी और माता-पिता से बातचीत
2. गाँव के बुजुर्गों जैसे हरिनाथ चाचा और मिश्रीलाल बाबा से चर्चा
3. पुराने फोटो और जमीन के दस्तावेज
4. मंदिर के पास लगे शिलालेख और पुराने पत्थर

निष्कर्ष: इस परियोजना को करते हुए मुझे यह एहसास हुआ कि हमारा इतिहास हमारे आसपास ही है — बस उसे समझने और जानने की जरूरत होती है। अपने गाँव और परिवार के इतिहास को जानकर मुझे गर्व महसूस होता है और यह मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

MUKULTclasses

प्रश्न 2. क्या हम इतिहासकारों की तुलना जासूसों से कर सकते हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।
उत्तर:- हाँ, इतिहासकारों की तुलना जासूसों से की जा सकती है क्योंकि दोनों ही सुरागों को खोजकर सत्य उजागर करने का कार्य करते हैं।

1. सूचनाओं की खोज – जासूस अपराध से जुड़े सुराग ढूँढता है, जबकि इतिहासकार अतीत के प्रमाणों की जाँच करता है।
2. प्रमाणों का विश्लेषण – दोनों ही झूठे और सच्चे तथ्यों को परखकर निष्कर्ष निकालते हैं।
3. कारणों की खोज – जासूस अपराध के पीछे की मंशा पता लगाता है, इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं के कारणों की पड़ताल करता है।
4. गोपनीय सच्चाइयाँ उजागर करना – दोनों छिपी या भूली हुई जानकारियों को सामने लाते हैं।
5. निष्कर्ष तक पहुँचना – अलग-अलग स्रोतों से मिली जानकारी को जोड़कर तार्किक निष्कर्ष निकालते हैं।

हालाँकि, जासूस वर्तमान की घटनाओं पर काम करता है, जबकि इतिहासकार अतीत की पड़ताल करता है। इस तरह, इतिहासकारों को "अतीत के जासूस" कहा जा सकता है।

प्रश्न 3. तिथियों के साथ कुछ अभ्यास-

- **समय-रेखा पर निम्नलिखित तिथियों को कालक्रमानुसार लगाइए –**
  323 सा.सं., 323 सा.सं.पू., 100 सा.सं., 100 सा.सं.पू., 1900 सा.सं.पू., 1090 सा.सं., 2024 सा.सं.

उत्तर: कालक्रमानुसार (सबसे पुराने से नवीनतम) तिथियाँ इस प्रकार होंगी—
1900 सा.सं.पू. → 323 सा.सं.पू. → 100 सा.सं.पू. → 100 सा.सं. → 323 सा.सं. → 1090 सा.सं. → 2024 सा.सं.

- **यदि सम्राट चंद्रगुप्त का जन्म 320 सा.सं.पू. में हुआ तो बताइए उनका संबंध किस शताब्दी से था? उनका जन्म बुद्ध के जन्म से कितने वर्ष पश्चात हुआ?**

उत्तर: चंद्रगुप्त मौर्य का जन्म 320 सा.सं.पू. में हुआ था।

किसी भी वर्ष की शताब्दी निकालने के लिए, यदि वर्ष ईसा पूर्व (सा.सं.पू.) में हो, तो उसे 100 से विभाजित करके 1 जोड़ते हैं।

320 सा.सं.पू. ÷ 100 = 3.2

उत्तर: सम्राट चंद्रगुप्त का संबंध चौथी शताब्दी सा.सं.पू. से था।

गौतम बुद्ध का जन्म 563 सा.सं.पू. में हुआ था।

चंद्रगुप्त का जन्म 320 सा.सं.पू. में हुआ।

अंतर: 563 - 320 = 243 वर्ष

उत्तर: चंद्रगुप्त मौर्य का जन्म गौतम बुद्ध के जन्म के 243 वर्ष बाद हुआ।

- **झाँसी की रानी का जन्म 1828 सा.सं. में हुआ। उनका संबंध किस शताब्दी से है? उनका जन्म भारत की स्वतंत्रता से कितने वर्ष पूर्व हुआ?**

उत्तर: झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 1828 सा.सं. में हुआ था।

किसी भी वर्ष की शताब्दी निकालने के लिए, वर्ष को 100 से विभाजित करके 1 जोड़ते हैं।

1828 ÷ 100 = 18.28

अत: झाँसी की रानी का संबंध 19वीं शताब्दी से था।

भारत को स्वतंत्रता 1947 सा.सं. में मिली।

झाँसी की रानी का जन्म 1828 सा.सं. में हुआ था।

अंतर: 1947 - 1828 = 119 वर्ष

अत: झाँसी की रानी का जन्म भारत की स्वतंत्रता से 119 वर्ष पूर्व हुआ।

- **'12,000 वर्ष पूर्व' को तिथि के रूप में बदलिए।**

उत्तर: यदि हम वर्तमान वर्ष को 2024 सा.सं. मानें, तो 12,000 वर्ष पूर्व की तिथि निकालने के लिए : 2024 - 12,000 = -9976

चूँकि ऋणात्मक वर्ष ईसा पूर्व (सा.सं.पू.) को दर्शाता है, इसलिए 12,000 वर्ष पूर्व का तिथिकरण होगा: 9976 सा.सं.पू.

प्रश्न 4. किसी निकटतम संग्रहालय के भ्रमण की योजना बनाइए। संग्रहालय की प्रदर्शनियों के विषय में पहले से कुछ जानकारी जुटा लीजिए। इस भ्रमण के दौरान टिप्पणियाँ तैयार कीजिए। भ्रमण के पश्चात एक संक्षिप्त रिपोर्ट लिखिए और उसमें भ्रमण से जुड़ी स्मृतियों एवं रोचक बातों या घटनाओं को रेखांकित कीजिए।

उत्तर:

संग्रहालय भ्रमण की योजना

संग्रहालय का नाम: राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

स्थान: नई दिल्ली

भ्रमण की तिथि: 10 अप्रैल 2025

भ्रमण का उद्देश्य: ऐतिहासिक धरोहरों और सांस्कृतिक विरासत को जानना, समझना और महसूस करना।

प्रदर्शनियों की जानकारी (पूर्व जानकारी):

1. प्राचीन भारतीय इतिहास अनुभाग: सिंधु घाटी सभ्यता, मौर्यकाल, गुप्तकाल की मूर्तियाँ और बर्तन।
2. मध्यकालीन भारत अनुभाग: मुग़ल काल की तलवारें, चित्रकला, शिलालेख।
3. आधुनिक भारत अनुभाग: स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी वस्तुएँ जैसे गाँधी जी के चित्र, पुराने दस्तावेज, पत्र।
4. लोक संस्कृति अनुभाग: उत्तर प्रदेश की लोक कलाएँ, पहनावा, लोक संगीत के वाद्य यंत्र।
5. प्राकृतिक इतिहास अनुभाग: वन्यजीवों के मॉडल, पक्षियों और जीव-जंतुओं की जानकारी।

भ्रमण के दौरान टिप्पणियाँ:

1. सिंधु घाटी की मिट्टी की मूर्तियाँ बहुत सुंदर और सजीव लग रही थीं।
2. एक दीवार पर अशोक के शिलालेख की प्रतिकृति देखकर इतिहास जीवंत हो उठा।
3. मुग़ल तलवारों की डिज़ाइन में बारीक नक्काशी थी।
4. स्वतंत्रता संग्राम अनुभाग में भगत सिंह का असली दस्तावेज़ देखकर मन गर्व से भर गया।
5. लोक संगीत में प्रयुक्त ढोलक और सारंगी को पहली बार इतने पास से देखा।

MUKUTClasses

भ्रमण के पश्चात संक्षिप्त रिपोर्ट:

1. 10 अप्रैल 2025 को हमारी कक्षा ने नई दिल्ली स्थित भारत सरकार के संग्रहालय का भ्रमण किया। यह यात्रा ऐतिहासिक जानकारी और सांस्कृतिक समझ के लिहाज़ से बेहद रोचक और शिक्षाप्रद रही।
2. संग्रहालय में हमने भारत के विभिन्न कालखंडों की झलक देखी। सबसे ज्यादा प्रभावशाली सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष थे। मिट्टी के बर्तन, मुहरें और मूर्तियाँ देखकर यह समझ आया कि हजारों साल पहले भी हमारी सभ्यता कितनी उन्नत थी।
3. लोक संस्कृति अनुभाग में देश की रंग-बिरंगी परंपराएँ देखने को मिलीं। लोक वाद्य यंत्रों को बजाते हुए कलाकारों का वीडियो भी दिखाया गया, जो बहुत आकर्षक था।
4. सबसे यादगार पल वह था जब हमने गाँधी जी की असली चश्मे और दस्तावेज़ देखे। पूरा माहौल बहुत प्रेरणादायक था।

रोचक बातें/घटनाएँ:

1. हमारे एक साथी ने अशोक के शिलालेख को ब्राह्मी लिपि में पढ़ने की कोशिश की, जो मज़ेदार था।
2. गाइड ने बताया कि संग्रहालय में कुछ चीज़ें 2000 साल से भी पुरानी हैं, जिसे सुनकर सब हैरान रह गए।
3. एक मूर्ति के सामने सेल्फी लेते समय एक छात्र का चश्मा गिर गया, जो बाद में मूर्ति के पीछे से मिला।

निष्कर्ष:

यह संग्रहालय भ्रमण केवल एक शैक्षिक यात्रा नहीं था, बल्कि अतीत से जुड़ने और अपने देश की विरासत को समझने का एक जीवंत अनुभव था। इसने हमें प्रेरित किया कि हम अपने इतिहास को जानें, समझें और उसे सम्मान दें।

प्रश्न 5. अपने विद्यालय में किसी पुरातत्व विज्ञानी अथवा इतिहासकार को आमंत्रित कीजिए और उनसे स्थानीय इतिहास एवं उसे जानना क्यों महत्वपूर्ण है, इस विषय में व्याख्यान देने का आग्रह कीजिए।

उत्तर:

आमंत्रण पत्र

[विद्यालय का नाम]
[पता]
[तारीख डालें]

सेवा में,
श्री जसपाल सिंह
पुरातत्व विभाग
नई दिल्ली

विषय: स्थानीय इतिहास पर व्याख्यान हेतु आमंत्रण

महोदय/महोदया,

हम आपको सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहे हैं कि हमारे विद्यालय में विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के उद्देश्य से एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य विषय है "स्थानीय इतिहास एवं उसे जानना क्यों महत्वपूर्ण है"।

हम आपके अनुभव और ज्ञान से हमारे विद्यार्थियों को लाभान्वित करना चाहते हैं। अतः हम आपको सादर आमंत्रित करते हैं कि आप हमारे विद्यालय पधारें और उपरोक्त विषय पर एक प्रेरणादायक व्याख्यान दें।

आपके अनुभव से विद्यार्थियों को इतिहास की महत्ता, विशेष रूप से स्थानीय इतिहास के संरक्षण और अध्ययन की आवश्यकता को समझने में सहायता मिलेगी।

सादर,
[आपका नाम]
[विद्यालय का नाम]
[संपर्क नंबर / ईमेल]

MUKUTclasses